कृषि (01)

(10)

वर्ष 2020

माध्यमिक शिक्षा … मध्यप्रदेश, भोपाल

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी …

विषय का नाम	विषय कोड	…क्षा का माध्यम
	001	

…कर तीर के निशान ↓ से मिलाकर ल…

[redacted]

320- 0490151

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

2	0	1	6	2	9	0	5	6

…ों में … नौ …

नीचे दिये गये उदाहरण अनुसार रोल नम्बर भरें।

उदाहरणार्थ	1	1	2	4	3	9	5	6	8
	एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पांच	छः	आठ

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

क :– पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में ✗ शब्दों में ✗

ख :– परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 2

ग :– परीक्षा का दिनांक 02 03 2020

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हायर सैकण्डरी परीक्षा केन्द्र क्रमांक 161022

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की … करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
श्रीमती विजयलक्ष्मी रैकवार उच्च०माध्य०शिक्षक शा.उ.मा.वि. कन्हवारा कटनी पंजीयन क्र. 72015199	…C. MARKAM Uchch Madhyamik Shikshak GOVT.H.S.S.KANHWARA Mo.8319006660 Val.No.720…

नोट :- "हायर सेकेंडरी परीक्षा में केवल वाणिज्य संकाय के विषयों तथा … प्रायोगिक विषय को छोड़कर शेष विषयों हेतु नियमित एवं स्वाध्यायी छात्र… 100 अंकों का होगा किन्तु नियमित छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक … एवं स्वाध्यायी छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक ही अंकसूची में प्रदर्शित …

प्रश्न SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर क्रमांक - 1.

(i) (ब) महादेवी वर्मा ।

(ii) (अ) कबीरदास

(iii) (ब) सुजान

(iv) (ब) बसंत ऋतु

(ब) पाड़ोन के जंगल में ।

उत्तर क्रमांक - 2.

(अ) छायावाद

(ब) श्रीकृष्ण

(स) जल शोधन

(द) तीन

इ) गणेश शंकर विद्यार्थी

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर क्रमांक - 3.

(1.) असत्य

(2.) सत्य

(3.) असत्य

(4.) असत्य

(5.) सत्य

B

उत्तर क्रमांक - 4.

(अ) सभी विपत्तियों को हरते हैं - (iii) गणेश जी

(ब) व्यंग्य की प्रधानता - (vi) नई कविता

(स) मध्यम वर्गीय परिवार की समस्या - (i) नये मेहमान

(द) कंस की बहन - (ii) देवकी

(इ) गाय करुणा की कहानी है - (iv) महात्मा गाँधी

योग पूर्व पृष्ठ

कुल अंक

प्रश्न क्र.

उत्तर क्रमांक - 5.

(अ) उद्धव

(ब) साध्य तथा असाध्य के रूप में।

(स) अन्योक्ति अलंकार

(द) सन् 1943 से

(इ) प्रसन्नता तथा हर्ष उल्लास का।

उत्तर - 6.

मीरां अपने आराध्य श्रीकृष्ण के लिए बैरागिन का वेश धारण करना चाहती थीं। इसके अलावा वह वही वेश धारण करना चाहती थी जिससे कृष्ण प्रसन्न हो।

उत्तर - 7.

चातक अपनी बोली से विरही हृदय को चोट पहुँचा रहा था इसलिए चातक को घातक कहकर सम्बोधित किया है।

Laser/Inkjet/Copier Label A4ST-

प्रश्न क्र.

उत्तर - 8. (अथवा)

क्षणिक आतंक से तात्पर्य - क्षण भर के लिए आये भय से जो थोड़े समय बाद नष्ट हो जायेगा। वह तुम्हारा छ नहीं बिगाड़ सकेगा।

उत्तर - 9. (अथवा)

इस संसार में समय के साथ सभी चीजें नष्ट होती हैं इसलिए फूल और मालिन अपना मधुवर्षण करके आने वाले समय अर्थात् भविष्य में मुरझा जायेंगे।

B
S
E

उत्तर - 10.

बसंत के आगमन पर नवयुवती बेल रूपी दुल्हन ने नवीन कोंपलों रूपी वस्त्र धारण कर लिये है। भौंरे गुंजार कर रहे हैं तथा बेलों के हार पहनकर समीर भी मंद-मंद बह रहा है। तथा धरती रूपी नायिका सुनहरी धान रूपी आँचल लहराने लगा है।

उत्तर - 11.

र्थहानि के भय के कारण व्यापारी किसी विशेष पावसाय में हाथ नहीं डालते हैं, क्योंकि उन्हें पने धन की हानि का भय लगा रहता है।

SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH

प्रश्न क्र.

उत्तर - १२.

रेवती का घर छोटा, जीवन की सुख-सुविधाओं से रहित तथा जेलखाने की कोठरी के समान है इसलिए वह घर को जेलखाना कहती है।

उत्तर - 13.

मानसिंह तात्या के दो अच्छे मित्र थे तथा तात्या बहुत समय से युद्ध लड़ रहे जिससे उनका स्वास्थ्य भी खराब हो गया। इसीलिए तात्या मानसिंह संरक्षण में गये थे।

उत्तर - 14.

उत्तराखंड के चारों धाम चार पवित्र नदियों के किनारे बसे हैं। यमुनोत्री का मार्ग यमुना नदी के किनारे, गंगोत्री का मार्ग गंगा नदी के किनारे-किनारे, केदारनाथ का मार्ग मन्दाकिनी नदी के किनारे तथा बद्रीनाथ का मार्ग अलकनन्दा नदी के किनारे-किनारे गया है।

SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH

प्रश्न क्र.

उत्तर - 15.

(i) सरोवर में पानी भरा है।

(ii) कश्मीर का सौन्दर्य मनमोहक है।

उत्तर - 16.

रौद्र रस :- किसी व्यक्ति या शत्रु द्वारा की किये गये अनुचित अपमान के कारण जब हृदय में क्रोध मान नामक स्थाई भाव जाग्रत होता है तो वहाँ रौद्र रस होता है।

उदाहरण -

श्रीकृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्रोध से जलने लगे।
सब शोक अपना भूलकर करतल युगल मलने लगे।
संसार देखे अब हमारे शत्रु रण में मृत पड़े।
करते हुये यह घोषणा वे हो गये उठकर खड़े॥

उत्तर - 17. अथवा

रामकुमार वर्मा की माँ एक सुसंस्कृत तथा सुशिक्षित महिला थी तथा अपने बच्चों में भी ऐसे ही संस्कार प्रदान करना चाहती थीं। इसी का परिणाम था की रामकुमार कभी अनोत्तीर्ण नहीं हुये बल्कि 'डिवीजन

प्रश्न क्र.

मे पास होते थे । पढ़ाई के संबंध उ में उनकी माँ का कहना था कि हमेशा प्रथम स्थान का ध्यान रखना चाहिए । तथा अपने लक्ष्य के प्रति एकाग्रता से कार्य करना चाहिए जिस प्रकार महाभारत काल में अर्जुन ने चिड़िया की आँख का ध्यान रखा था ।

उत्तर - 18. (अथवा)

राष्ट्रभाषा :-

प्रत्येक सच्चे स्वतंत्र राष्ट्र की एक सर्वसम्मत राष्ट्रभाषा होती है । राष्ट्रभाषा में राष्ट्र की संस्कृति, सभ्यता, इतिहास की भावना निहित होती है जिससे जन जीवन प्रभावित होता है । इसे 'सम्पर्क भाषा' भी कहते हैं । राष्ट्रभाषा उसी प्रकार महत्वपूर्ण होती है जिस प्रकार राष्ट्र चिन्हन, राष्ट्रगीत तथा राष्ट्रध्वज ।

विशेषताएँ :-

राष्ट्रभाषा की दो विशेषताएँ निम्नानुसार हैं-

1. यह शिक्षा के विकास में सहायक होती है । राष्ट्रभाषा को जन सम्पर्क की भाषा भी कहा जाता है ।

राष्ट्रभाषा में राष्ट्र की संस्कृति तथा सभ्यता की भावना निहित होती है ।

B
S
E

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर - ~~19~~ 20 (अथवा)

छायावाद और रहस्यवाद में अंतर ~~निम्नानि~~ निम्नानुसार हैं -

छायावाद	रहस्यवाद
1. इसमें कल्पना की प्रधानता होती है।	1. इसमें चिंतन की प्रधानता रहती है।
2. इसमें भावना की प्रधानता होती है	2. इसमें ज्ञान एवं बुद्धित्व की प्रधानता रहती है।
3. इसके मूल में प्रकृति होती है।	3. इसकी प्रकृति दार्शनिक होती है।
4. छायावाद में अज्ञात सत्ता के प्रति प्रेम की भावना होती है।	4. इसमें ईश्वरीय सत्ता के प्रति हृदयगत प्रेम की भावना रहती है।
5. इसमें नारी सौन्दर्य का वर्णन किया जाता है	5. इसमें परमात्मा ~~की~~ के सौन्दर्य का वर्णन रहता है

B
S
E

उत्तर - 19.

श्लेष अलंकार:-

श्लेष का अर्थ होता है - चिपका या जुड़ा होना। कविता की जिन पंक्तियों में एक शब्द बार-बार आता है तथा उससे ~~अ~~ अनेक अर्थ जुड़े रहते हैं, वहां श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरण - रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सुन।
पानी गये न उबरे मोती मानुष चून।।

~~स~~स्पष्टीकरण - यहाँ पानी शब्द तीन बार आया है जिसके अर्थ क्रमशः - आत्म-सम्मान, कांति तथा जल से हैं।

प्रश्न क्र.

उत्तर - 21. (अथवा)

नाटक और एकांकी में चार अंतर निम्नानुसार हैं —

नाटक	एकांकी
1. नाटक की कथावस्तु लम्बी होती है, क्योंकि इसमें अन्य प्रासंगिक कथाऐं भी जुडी रहती हैं।	1. एकांकी की कथावस्तु छोटी होती है, क्योंकि इसमें अन्य प्रासंगिक कथाऐं नही होती है।
2. इसमें अनेक पात्र होते हैं	2. इसमें पात्रों की संख्या सीमित होती है।
3. यह दृश्य काव्य का एक विस्तृत रूप है।	3. यह दृश्य काव्य का छोटा रूप है।
4. इसमें अनेक अंक होते हैं	4. इसमें एक अंक होता है।
जैसे - चंद्रगुप्त (जयशंकर प्रसाद)	5. जैसे - दीपदान (रामकुमार वर्मा)

B
S
E

उत्तर - 22.

तुलसीदास का साहित्यिक परिचय :-

जन्म - सन् 1532

मृत्यु - सन् 1623

प्रश्न क्र.

(अ) दो रचनाएँ :-

तुलसीदास जी की रचनाएँ निम्नलिखित हैं - रामचरितमानस, कवितावली, दोहावली, पार्वती मंगल आदि।

(ब) भावपक्ष :-

1. भक्तिभाव :-

तुलसीदास राम के अनन्य भक्त थे तथा वह स्वयं को राम का दास मानते थे उनकी इन्होंने अपने साहित्य में राम का वर्णन मुख्य रूप से किया है।

समाजसुधारक :-

तुलसी जी ने कुण्ठित मानव समाज को आशावादी भाव से भरने का कार्य किया।

रसों का वर्णन :-

तुलसी जी के काव्यों में रसों की छटा देखने को बनती है इनके काव्य में मुख्य रूप से भक्ति रस देखने को मिलता है।

* कलापक्ष :-

भाषा :-

तुलसीदास ने अपनी साहित्यिक रचनाओं में ब्रजभाषा तथा अवधी भाषा दोनों का प्रयोग किया है, परन्तु

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

इनकी मुख्य भाषा ब्रजभाषा है।

शैली :-

इनकी रचनाओं में उन्होंने गेयपद शैली का प्रयोग किया है। तथा सभी शैलियों का प्रयोग सहज ढंग से किया है।

अलंकारों का प्रयोग :-

तुलसी जी ने रूपक, उत्प्रेक्षा तथा उपमा अलंकारों का प्रयोग अपनी रचनाओं में मुख्य रूप से किया है।

छंद योजना :-

इनकी छन्द योजना अति सुन्दर है, इन्होंने दोहा, चौपाई, रोला तथा कवित्त छंद का प्रयोग किया है।

(स) साहित्य में स्थान :-

तुलसीदास सगुण काव्य धारा रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि रहे हैं थे। इन्होंने राम का गुणगान प्रमुख रूप से किया। इन्हें हिन्दी काव्य जगत का 'चन्द्रमा' कहा जाता है हिन्दी साहित्य सदैव इनका ऋणी रहेगा।

* सूर-सूर्य, तुलसी सशशि, उड्डन केशवदास।

उत्तर - 23.

आचार्य रामचंद्र शुक्ल :-

जन्म - 11 अक्टूबर 1884 में।

मृत्यु - 2 फरवरी 1940 को।

BSE

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

(अ) दो रचनाएँ :-
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की दो रचनाएँ निम्नानुसार हैं-
निबंध संग्रह - चिन्तामणि भाग-I, विचार वि्थी, भय, क्रोध
आलोचना - रस मीमांसा, त्रिवेणी
इतिहास - हिन्दी साहित्य का इतिहास।

(ब) भाषा शैली
भाषा :-
इनकी भाषा प्रौढ़, परिष्कृत तथा ए शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। इनकी भाषा में व्यर्थ का शब्द आडम्बर देखने को नहीं मिलता है। संस्कृत के तत्सम शब्दो की बहुलता हैं तथा वाक्य विन्यास लम्बे हैं।
इनकी भाषा व्यवस्थित तथा व्याकरण बद्ध है तथा शिथिलता देखने को नहीं मिलती हैं। भाषा की इसी कसावट के कारण इसमें सामासिक शक्ति पाई जाती है।
कहीं-कहीं भाषा सूक्तिमय बन जाती है जैसे- बैर क्रोध का आचार या मुरब्बा है।

शैली :-
इनकी शैली के जन्मदाता ये स्वयं है क्योंकि ये किसी भी बात को सूक्ती मे कहते है तथा स्वयं ही उसकी व्याख्या के कर देते हैं। इनकी चार शैलियाँ है
गवेषणात्मक शैली :-
इस शैली का प्रयोग समीक्षात्मक तथा विवेचनात्मक निबंधों मे देखने को मिलता है।

SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH

प्रश्न क्र.

समीक्षात्मक शैली :- इस शैली का प्रयोग अनुसंधान परक तथा सिद्धांतिक निबंधों में मिलता है।

भावात्मक :- इस शैली में वाक्य विन्यास कहीं छोटे तथा कहीं बड़े हैं।

हास्य व्यंग्य प्रधान शैली :- यह शैली इनकी रचनाओं में ज्यादातर देखने को नहीं मिलती है क्योंकि यह इसका प्रयोग तो यह रोचकता लाने के लिए करते हैं।

B
S
E

साहित्य में स्थान :- इन्होंने अपनी असाधारण प्रतिभा से हिन्दी की कई विधाओं में रचना की है। रामचंद्र शुक्ल को आलोचनात्मक तथा मनोविकारात्मक निबंधो का जन्मदाता माना जाता है। ये एक युग प्रवर्तक निबंधकार हैं।

~~उत्तर~~ - उत्तर - 24.

संकेत - माटी कहे कुम्हार - - - - - - आया हाथ।

संदर्भ :- निम्न पंक्तियाँ ~~नि~~ हमारी पाठ्यपुस्तक स्वाति के पाठ 'नीति काव्य' के 'अमृतवाणी' शीर्षक से ली गई हैं जिसके रचयिता कबीरदास हैं।

प्रसंग :-

प्रश्न प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने शरीर की नश्वरता का वर्णन किया है।

व्याख्या :-

कबीरदास कुम्हार को संकेत करते हुये हैं- कि माटी कुम्हार से कहती है की तू आज मुझे अपने पैरों के नीचे रौंदकर खुश हो रहा है एक दिन वह भी आयेगा जब मैं तुझे अपने पैरों के नीचे रौंदूंगी। भाव यह है की मृत्यु के पश्चात मिट्टी का यह चोला मिट्टी में ही मिल जाती है।
दूसरी साखी में कबीरदास कहते हैं यह शरीर मिट्टी के कच्चे घड़े के समान है जो वर्षा की बूंदे पड़ने से टूट जायेगा और हाथ में कुछ शेष नहीं बचेगा। जिसे हम साथ लिए फिरते हैं। भाव यह की वर्षा रूपी मृत्यु के पड़ने से यह शरीर रूपी घड़ा फूट जायेगा।

काव्य सौन्दर्य :-

(i) सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग है।
(ii) शरीर की नश्वरता के बारे में बताया है।
(iii) संस्कृत शब्दों की प्रचुरता है।
(iv) वासशैली, अनुप्रास अलंकार।

उत्तर-25.

संदर्भ :-

प्रस्तुत पद्यांश गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक स्वाति के पाठ 'तिमिर गेह में किरण आचरण' से लिया गया है जिसके

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH

प्रश्न क्र.

लेखक डॉक्टर श्यामसुन्दर दुबे हैं।

प्रसंग :-

अन्धकार का विलोम - प्रकाश। प्रकाश जीवन का दूसरा नाम है। यहां प्रकाश का अर्थ बताते हुये कहा है कि दिये तथा बल्ब का प्रकाश तो प्रकाश का मात्र आभास कराता है असल प्रकाश तो कर्म और आचरण में है।

व्याख्या :-

लेखक कहते हैं कि प्रकाश का अर्थ बताते हुये कहते हैं प्रकाश बाहर की वस्तु न होकर चरित्रार्थ होने वाली वस्तु है वह है - अच्छाई। कर्म और आचरण को अपनाकर व्यक्ति निर्माण का कार्य करता है तथा निर्माण का कार्य वही व्यक्ति कर सकता है जिसके विचार अच्छे हो। जो दूसरों के दुःख, सुख, लाभ-हानि तथा पीड़ा में सहभागी बनता है वही निर्माण का कार्य कर सकता है। गेहूँ का पौधा जो कभी तिल के समान था वह बड़ा होकर आटे के रूप में संसार को जीवन दान देता है इसलिए लेखक कहते हैं निर्माण को किसी कमरे में बंद नहीं किया जा सकता है यह तो जल की धारा है जो निरंतर बहती रहती है।

विशेष :-

1. असल प्रकाश का अर्थ बताया है।
2. उदाहरणों के माध्यम से कथन का स्पष्टीकरण
3. शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग किया है।

BSE

प्रश्न क्र.

उत्तर - 26.

(अ) गद्यांश का शीर्षक - शिक्षा का सही उद्देश्य।

(ब) जो कुछ वांछित परिणाम दे वही सही श्रम है।

(स) सही श्रम वह होता है जो कुछ परिणाम दे। शिक्षण का सही उद्देश्य कर्मठ जनों की प्रतिशत बढ़ाना होता है हमें परिश्रम ऐसा करना चाहिए जो कुछ परिणाम दे अन्यथा परिश्रम तो बालक खेलने मे तथा पशु दौड़ने में भी करते हैं।

उत्तर - 27.

प्रति,
सचिव महोदय,
माध्यमिक शिक्षा मण्डल,
भोपाल (म. प्र.)

विषय :- अंग्रेजी विषय की उत्तर-पुस्तिका के पुनर्गणना हेतु।

मान्यवर,

उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदन है की मेरी अंग्रेजी विषय की उत्तर-पुस्ति में आशानुकुल अंक नहीं आयें है जबकि मेरी अंग्रेजी विषय की परीक्षा बहुत अच्छी गयी थी जिसमें मेरे नम्बर आने थे 90-95 तक परन्तु आये केवल 45।

अतः महोदय से निवेदन है कि मेरी उत्तर-पुस्तिका का पुनर्गणना करवाने की कृपा करें। आपकी अति दया होगी।

मेरी जानकारी निम्नवत है

धन्यवाद

दिनांक
02/03/2020

नाम - मोहन शर्मा
पिता का नाम - राकेश शर्मा
रोल नं. - 303556067

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर - 28.

(iv) विज्ञान और मानव जीवन

" जिसने नई सभ्यता दी मानव की संतान को।
श्रद्धापूर्वक प्रणाम है, मेरा उस विज्ञान महान को।।"

प्रस्तावना :-

"प्रकृति के क्रमबद्ध अध्ययन से अर्जित ज्ञान को विज्ञान" कहते है। विज्ञान आवश्यकता की जननी है। मानव की जब आवश्यकताऐं बढ़ती जाती है तो वह नये-नये आविष्कार करता जाता है आज विज्ञान का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। परन्तु इसके साथ मानव यह भूल जाता है कि इसके अतिदोहन से अनेक दुष्परिणाम होते हैं।

हमारा अतीत :-

आज से कुछ वर्ष पहले विज्ञान का विकास इतना नहीं था। तब हमारे पास ना कहीं जाने के साधन थे ना ही ही संचार के साधन। तब हमारा कार्य बहुत समय में होता था। परन्तु आज विज्ञान की प्रगति से हमारे कार्य क्षण भर में हो जाते है। हमें चीजें तुरंत उपलब्ध हो जाती है।

पृष्ठ 19 के अंक

प्रश्न क्र.

विज्ञान की उपलब्धियाँ :-

आज विज्ञान ने कई क्षेत्रों में उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं जो निम्नानुसार हैं :-

(i) शिक्षा के क्षेत्र में :-

आज विज्ञान के क्षेत्र की वजह से प्रिंटिंग प्रेस का विकास किया है जिससे शिक्षा जगत में नई क्रांति आई है जिससे पढ़ाई का स्तर काफी ऊँचा बढ़ा है।

2. चिकित्सा के क्षेत्र में :-

चिकित्सा के क्षेत्र में भी नई क्रांति आई है आज एक्सरे, अल्ट्रासाउंड, तथा सोनोग्राफी जैसी व्यवस्था चिकित्सा में आ गई है। जिससे सभी बिमारीयों की जानकारी तुरंत हासिल हो जाती है।
जिससे कैंसर, मधुमेह आदि बीमारियों सही किया जा सकता है।

3. संचार के क्षेत्र में :-

संचार के क्षेत्र में इसने कई प्रगतियाँ की हैं इससे दूरदर्शन, टेलीफोन आदि का निर्माण किया गया है जिससे एक क्रांति समाज में आई है जिससे हर जगह की खबर हमें तुरंत प्राप्त हो जाती है।

4. यातायात के क्षेत्र में :

यातायात के क्षेत्र में भी इसने बहुत प्रगति की है। इससे आज हमारे

प्रश्न क्र.

परिवहन के साधनों का निर्माण किया जा रहा है। जिससे हम हर जगह आसानी से आ जा सकते है, हमारी बड़ी-बड़ी यात्रा होती तथा कुछ समय में हो जाती है।

विज्ञान एक अभिशाप :- विज्ञान एक हमारे लिये चमत्कार है जो अभिशाप भी है।

① इससे पर्यावरण प्रदूषण होता है।

② इससे यातायात के साधनों का विकास हुआ है व वायु प्रदूषण करते है।

③ कारखानों की वजह से जल प्रदूषण होता है।

उपसंहार :- हर सिक्के के दो पहलु होते है एक उससे लाभ तो दूसरी उससे हानियाँ भी होती है। इसलिए इसका उपयोग हमें सावधानी पूर्वक करना चाहिए। इससे हमें बहुत लाभ प्राप्त हुये है। इससे हमारे उपयोग की सभी वस्तुऐं प्राप्त हुई है।

CATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH ... NDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY

श्न क्र.

(ब) (iv) जल ही जीवन है

जल से ही जीवन, जल ही जीवन, जल ही जीवन का दाता है
जल संरक्षण करले मानव जल ही भाग्य विधाता है

रूपरेखा :-

1. प्रस्तावना
2. जल का महत्त्व
3. जल के विभिन्न स्रोत
4. जल की कमी
5. जल संरक्षण के उपाय
6. उपसंहार

B
S
F